



डॉक्टर की बीवी के हुस्न का रसपान

“मैं किराये के मकान में रहता था, उसी मकान में एक डॉक्टर भी रहता था. उसकी बीवी आइटम चीज थी, देखते ही लंड तुनके मारने लगता था. उसे कैसे मैंने अपने जाल में फंसा कर चोदा ? ...”

Story By: (kumar.nitish)

Posted: Saturday, March 23rd, 2019

Categories: [पड़ोसी](#)

Online version: [डॉक्टर की बीवी के हुस्न का रसपान](#)

डॉक्टर की बीवी के हुस्न का रसपान

दोस्तो, मैं नीतीश, अन्तर्वासना का बहुत बड़ा फैन हूँ। मैं करीब 15 वर्ष से अन्तर्वासना में कहानियाँ पढ़ रहा हूँ। बहुत दिनों से मेरे मन में भी ये विचार आ रहा था कि मैं भी अपनी प्यार की कहानी अन्तर्वासना पर भेजूँ। खैर, आज मैं अपनी चुदाई की कहानी आप सबों के साथ बाँटने जा रहा हूँ।

जैसा कि मैं पहले ही बता चुका हूँ कि मेरा नाम नीतीश है। मेरी उम्र 35 वर्ष है। रंग गोरा, लम्बाई 5 फुट 7 इंच और मेरे लंड की मोटाई 2.5 इंच और लम्बाई 8 इंच है। मैं कोडरमा शहर (झारखंड) से 35 किमी दूर एक निजी विद्यालय में शिक्षक हूँ।

यह घटना 2015 की है। मैं अपनी पत्नी और बेटे के साथ भाड़े के मकान में रहता था। उसी मकान में एक डॉक्टर भी रहता था जिसकी बीवी एकदम टनाटन आयटम थी, नाम था चंचल।

जब मैंने पहली बार उसे देखा तो उसके हुस्न के जाल में मैं उसी दिन से फंसता चला गया। कमाल का जिस्म था उसका ; गोरा बदन, मम्मों का साइज लगभग 36", उम्र 27 वर्ष। कुल मिलाकर अप्सरा थी वो। देखते ही मेरा लंड उसकी चुत को रगड़ने के लिए बेताब हो जाता था।

उस मकान में पानी हम सभी को चापाकल (हैण्ड पम्प) से लेना पड़ता था क्योंकि उस क्षेत्र में बिजली की समस्या रहती थी। चंचल रोज चापाकल पर ही अपने कपड़े धोया करती थी जिससे मुझे उसके हुस्न का दीदार करने का मौका रोजाना मिल जाता था। मैं उसे भाभी कह कर बुलाता था। उससे बात करने का मौका मेरी पत्नी के कारण ही मुझे मिला। और यहीं से शुरु हुई हम दोनों की दोस्ती। मेरी बीवी तो उसे डॉक्टरनी कहती थी।

रोजाना मैं किसी न किसी बहाने उससे बात करने लगा। चूँकि वो एक डॉक्टर की बीवी थी इसलिए कभी दवा के बहाने तो कभी किसी बहाने उससे बात करने लगा।

धीरे-धीरे हम दोनों के बीच मजाक भी होने लगा। और ये मजाक कब हम दोनों को एक दूसरे के करीब लेते आया हमें पता ही नहीं चला। जिसके कारण जब उसका पति घर पर नहीं होता और मेरी पत्नी घर या मायके गई होती थी तो हम दोनों रात में खूब मस्ती करते।

यहाँ तक कि अब चुदाई की भी बात होने लगी। हांलाकि खुल कर इस पर कभी बात नहीं हुई थी लेकिन इशारों में सब कुछ हो रहा था।

उसके नाम का और उसकी रसीली चुत को सोच-सोच कर मैं कई बार मुठ भी मार चुका था।

एक बार की बात है, बारिश का मौसम था और मेरी पत्नी घर गई हुई थी। शनिवार को हाफ डे स्कूल होने के कारण मैं जल्दी अपने घर आ गया था। सप्ताह का अंतिम दिन होने की वजह से थोड़ा थकावट महसूस कर रहा था इसलिए घर आते ही मैं सो गया।

शाम में लगभग 6 बजे के आसपास उठा तो फ्रेश होने के लिए चापाकल पर गया। जब मैं फ्रेश हो रहा था तो उसी समय चंचल भाभी भी बाहर निकली। उस समय वो एक झीनी नाईटी पहनी हुई थी और शायद वो अंदर ब्रा नहीं पहनी हुई थी जिसके कारण उसके मम्मे उभर कर हिल रहे थे और उसके मम्मे भी झलक रहे थे।

मैंने जब उसे देखा तो एकटक उसे देखते ही रह गया। वो मुझे देखकर मुस्कुरा रही थी। शायद वो भी सो कर उठी थी और फ्रेश होने के लिए ही आई थी।

मैंने उसे 'गुड इवनिंग भाभी ...' कहकर विश किया तो उसके तरफ से भी जवाब आया।

फिर चंचल ने मेरे घूरने का कारण पूछा तो मैं बस मुस्कुरा कर रह गया।

तो भाभी ने फिर वही सवाल दुबारा दाग दिया कि मैं उसे क्यों एकटक देख रहा था ?

तब मैंने उससे कहा- भाभी, आप मेरा जवाब सुनकर बुरा मान जाओगी।

भाभी ने कुछ जवाब नहीं दिया बल्कि उसने मुझसे चापाकल चलाने को कहा ताकि वो फ्रेश हो सके।

फ्रेश होने के लिए जैसे ही वो झुकी उसके गोरे और टाइट मम्मे उसकी नाइटी से साफ दिखने लगे। मैं चापाकल चलाते चलाते मैं उसके मम्मों को ख्यालों में चूसने लगा था। साली के मम्मे थे ही इतने मस्त।

अचानक मेरे ऊपर पानी के छीटे पड़े और मैं पूरी तरह से भीग गया। चंचल मेरे ऊपर पानी डाल कर हँसती हुई जा रही थी। मैं थोड़ी देर उसे जाते हुए देखता रहा फिर अचानक मैंने जग में पानी लिया और दौड़ कर उसके नजदीक जाकर जग का सारा पानी उस पर डाल दिया जिससे चंचल की नाइटी भीग गई।

उसी तरह भीगे बदन ही वो मेरी तरफ पलटी और बोली- मिल गयी दिल को ठंडक न? या अभी और कुछ करना है?

मैं उसकी भीगी नाइटी से चिपके उसके उभारों को देख रहा था। मेरा लंड टाइट होकर फड़फड़ा रहा था। मेरे तो होश ही उड़े हुए थे उसकी मस्त जवानी को देखकर।

चंचल ने इस बार मेरी बाँह पकड़कर जोर से हिलाई और पूछने लगी- क्या हुआ मास्टर साहब, कहाँ खो गए?

तो मैंने कहा- भाभी और कहाँ ... बस आपके हुस्न के जाल में। मन कर रहा है कि आपको अपनी बाँहों में भर कर आपके संगमरमरी बदन पर अपने होठों से चूमता रहूँ और आपके मजेदार संतरों का रस निचोड़ लूँ और उसे मसल दूँ।

चंचल इतना सुनने के बाद बोली- अच्छा जी, तो आप अपने मन में मेरे बारे में यही सब सोचते हैं? आने दिजिए आपकी बीवी को ... मैं सब बता दूंगी।

तब मैंने उससे कहा- क्या भाभी, आप भी न! आप हो ही इतनी जबरदस्त कि कोई भी पागल हो जाएगा आपके हुस्न के जाम को पीने के लिए। और रही बात मेरी ... तो मैं

आपको बता दूँ कि मैं जिस दिन पहली बार आपको देखा था, उसी दिन से आपके इस मदमस्त जवानी का दीवाना हो गया था। और आज मैंने अपनी इच्छा आपके सामने रख दी। अगर बुरा लगा हो तो सॉरी भाभी!

और इतना कहकर मैं अपने रूम चला गया। मुझे बड़ा ही डर लग रहा था कि कहीं वो इस बारे में अपने पति को न कह दे। लेकिन संयोग से उस दिन उसका डॉक्टर पति बाहर गया हुआ था और दूसरे दिन आता। खैर मैं इन्हीं सब सोचों में खोया हुआ था कि अचानक चंचल की आवाज आई। वो मुझे बुला रही थी।

मैं बाहर निकला तो देखा कि उसने अपनी नाइटी चेंज नहीं की थी। उसी तरह भीगी नाइटी में ही जिसमें उसका गोरा बदन दिख रहा था मेरे रूम के पास खड़ी थी।

मैंने कहा- हाँ भाभी, बोलिए क्या बात है?

तो वो मेरे से बोली- क्या हुआ? तुम अचानक मुझसे बात करते-करते अंदर आ गए?

मैंने कहा- भाभी, बुरा तो नहीं ना मानी मेरी बात का?

तो वो खिलखिलाकर हँस पड़ी और बोली- मास्टर साहब अगर बुरा लगता तो क्या हम इसी भीगी नाइटी में आपके पास आते।

उसका इतना बोलना था कि मैं अपने आपको रोक न सका और उसका हाथ पकड़कर उसे अपनी बांहों में लेकर उसके गोरे गालों पर एक लंबा चुम्बन दे दिया। अचानक जो मैंने उसे चुम्बन किया था तो वो भी समझ नहीं पाई कि आखिर हुआ क्या।

लेकिन जब उसे समझ में आया तो वो थोड़े बनावटी गुस्सा दिखते हुए बोली- हम आपके बात का बुरा नहीं माने तो इसका मतलब ये नहीं कि आप कुछ भी कर लीजिए मेरे साथ। आप सच में बहुत शैतान हैं मास्टर साहब। आइंदा ध्यान रखिएगा कि दुबारा ये हरकत न हो। खैर मैं पूछने आई थी कि क्या आप चाय पीजिएगा?

मैंने कहा- अगर शुद्ध दुध की चाय बनाकर पिलाओगी तो जरूर पियेंगे भाभी।

मैंने यह बात उसके मम्मों के तरफ इशारा करते हुए कहा था और ये बात वो भी समझ गई थी इसलिए वो मुस्कुराती हुई बोली- बदमाशी करना नहीं छोड़िएगा न!
और इतना बोल कर अपनी चूतड़ मटकाते हुए चली गई।

मैं समझ गया था कि उसकी चुत को लंड चाहिए था जो उसके चुत को मथ कर उसका पानी निकाल सके। मैं उस समय एक बनियान और पजामा पहना हुआ था, चड्डी पहना ही नहीं था। घर पर मैं यही पहनता हूँ।

थोड़ी देर बाद चंचल भाभी चाय ले कर आई। लेकिन सिर्फ एक कप चाय थी। मैंने उससे पूछा- भाभी सिर्फ एक कप और आप ?

और इतना बोल कर मैंने दो कुर्सी पीछे जिधर चापाकल था निकाल कर लगा दी।

चंचल बोली- हम चाय नहीं पियेंगे।

तब मैंने कहा- अगर आप चाय नहीं पियोगी तो मैं भी नहीं पीऊँगा।

और इतना बोल कर मैं एक कुर्सी पर बैठ गया।

लेकिन चंचल खड़ी रही। मैंने उससे बैठने को बोला तो वो साली भाव खाकर बोली- मैं अंजान लोगों के पास नहीं बैठती और न अंजान लोगों के पास बैठकर कुछ खाती-पीती हूँ।

मेरा लंड फड़फड़ा ही रहा था उसको चोदने के लिए। मैंने सोचा कि क्यों नहीं इसे अपनी गोद में बिठा लें; शायद तब चाय पी ले।

और फिर मैं बिना कुछ सोचे उसका हाथ पकड़कर अपनी गोद में बिठा लिया और उसकी पतली कमर को अपनी बाँहों में जकड़ लिया। वो बैठ तो गई मेरी गोद में लेकिन नखरे दिखाने लगी।

था तो साली का मन मेरी गोद में बैठने का लेकिन औरत जात की बात ही कुछ और होती है ; वो अपने मुँह से बोलती नहीं है ; शर्म का गहना जो होता है चढ़ा हुआ।

और यही बात उनकी नशीली अदाओं में चार चाँद लगा देता है।

चंचल छटपटा रही थी मुझसे अलग होने के लिए लेकिन कुछ बोल नहीं रही थी क्योंकि उसके अंदर भी आग लगी हुई थी जवानी की, मेरे लंड को खाने के लिए तड़प रही थी वो ! और इसी चक्कर में चाय का कप मेरे हाथ से छुट गया ।

कप बचाने के लिए मैं जैसे ही झुका मेरा हाथ उसके उन्नत मम्मों पर चला गया । लेकिन मेरे हाथ को हटाने की कोशिश भी नहीं की क्योंकि चंचल भी यही चाहती थी ।

मैं सीधा होकर बैठा और चंचल की कमर को अच्छी तरह से पकड़ कर उसे अपनी गोद में बैठाया और बोला- क्यों नखरे कर रही हो यार ? खुद भी इस जवानी की आग में जल रही हो और मुझे भी जला रही हो ।

अब तक चंचल को भी मजा आने लगा था क्योंकि मेरे हाथ उसके मम्मों पर थे और उन्हें सहला रहे थे. इसलिए उसने अब नखरे करना बंद कर दिया और मेरी बात सुनकर बोली- मास्टर साहब, दम है मेरे अंदर की आग को बुझाने का ? तुम्हारे में वो दम नहीं है । तुम सिर्फ बच्चों को पढ़ाने में अपना ध्यान और दम लगाओ । ये तुम्हारे बस की बात नहीं । एक तरह से वो मुझे आमंत्रण दे रही थी उसे चोदने के लिए । तब मैं उससे बोला- रात में मिलते हैं तुम्हारे बिस्तर पर !

और इतना बोल कर मैंने उसके मम्मों को अपने दोनों हाथों से दबोचा और उसके रसीले होठों पर अपने होंठ रख कर चूसने लगा । चूंकि वो अब जान चुकी थी कि मैं भी उसको चोदने के लिए तड़प रहा हूँ इसलिए वो भी मेरे होठों पर चुम्बन का जवाब चुम्बन से दे रही थी ।

थोड़ी देर बाद जब हम अलग हुए तो वो बोली- मास्टर साहब, तुम अगर हमको यहाँ से अपनी गोद में उठाकर मेरे बिस्तर तक ले जाओ तो फिर ...

और इतना कहकर वो चुप हो गई ।

तब मैंने उसकी कमर पर एक हाथ रखकर और दूसरे हाथ से उसके गोलाइयों को मसलते

हुए कहा- बोलो न चंचल तो फिर क्या ? क्या होगा उसके बाद ?

चंचल जो अपने चुचों के मसलवाने के कारण वासना के गोते लगा रही थी और अपनी गांड मेरे लंड से रगड़ रही थी, अचानक मेरे हाथ से छुटकर अपने रूम के दरवाजे पर पहुँची और बोली- खाना खाकर आइए तब बतायेंगे.

और इतना कहकर उसने अपने कमरे का दरवाजा बंद कर लिया ।

चूंकि रात के 8 बज चुके थे और मुझे भूख भी लगी थी, मैं बाहर जाकर होटल में खाना खाकर आ गया । आधे घंटे बाद मैंने बाल्टी ली और नहाने चापाकल गया । मेरी आदत थी रोज रात में नहा कर सोने की । मैं जब नहा रहा था तो चंचल मुझे नहाते हुए अपनी खिड़की से देख रही थी ।

मैं भी एक नंबर का हरामी ; मैं अपना लंड निकाल कर चंचल को दिखा कर आगे पीछे करने लगा । चूंकि चंचल अंधेरे में थी इसलिए वो मुझे दिख तो नहीं रही थी लेकिन मैं उसे साफ दिख रहा था क्योंकि मैंने इमरजंसी लाईट जलाया हुआ था ।

नहाने के बाद मैंने अपने कमर पर गमछा लपेटा और जाने लगा कि तभी चंचल अपने रूम का दरवाजा खोलकर बाहर निकली और बोली- नहाना हो गया मास्टर साहब ?

मैंने हाँ में जवाब दिया और साथ में बोला- जानेमन, अगर तुम साथ होती तो नहाने का मजा और बढ़ जाता !

और इतना बोलकर मैं फिर उसे अपनी बांहों में खींच लिया और उसके मम्मों पर अपने हाथ रख दिया ।

तब वो सिसकारते हुए बोली- अपना दम दिखाओ और हमको अपनी गोद में उठाकर मेरे बिस्तर तक ले जाओ ।

“बस इतनी सी बात ?” इतना बोलकर उसे एक झटके में मैंने अपनी गोद में उठाया और उसे उसके बिस्तर पर ले जाकर टिका दिया और उससे पूछा- अब बताओ कि अब क्या ?

तो वो प्यार से बोली- मुझे कुछ चाहिए तुमसे मास्टर साहब ।

तब मैंने पूछा- बोलो न जानेमन क्या चाहिए ?

तो वो बोली- तुम मास्टर हो और मास्टर को पता होता है कि उसके स्टूडेंट को क्या चाहिए ।

उसका इतना बोलना था कि मैंने उसकी बगल में लेट कर अपना हाथ सीधा उसकी चुत के ऊपर रखा और बोला- जानेमन, बोलकर बतायें या प्रेक्टिकल करके बतायें ?

तो वो बोली- तुम मास्टर हो तुम्हें पता होना चाहिए कि स्टूडेंट को कैसे समझाया जाए कि उसे अच्छी तरह से समझ में आ जाए ।

मेरा हाथ तो था ही उसकी चुत के ऊपर ... उसकी नाइटी के ऊपर से ही मैं उसकी चुत को सहलाने लगा और मैं अपने होंठों से उसके होठों को चूसने लगा ।

वो भी मेरे होठों को चूस रही थी । धीरे-धीरे वो गर्म हो रही थी और मेरा लंड महाराज फड़क रहा था चंचल की चुत को फाड़ने के लिए ।

उसके मुँह से कामुक भरी सिसकारियाँ निकल रही थी जो कमरे को गर्म कर रही थी और मेरे अंदर की आग को भड़का रही थी । उसके होठों को चूसते चूसते मैंने अपना हाथ उसकी नाइटी के अंदर डाल दिया और उसके गुदाज मम्मों को मसलने लगा । मैं चूँकि सिर्फ एक गमछा बांधे हुआ था अपनी कमर पर ... वो गमछा का मेरी कमर से कब खुल गया मुझे पता भी नहीं चला . यानि मैं पूरी तरह से नंगा हो गया था ।

मैं उसके होठों को चूमते हुए नीचे जाने लगा और उसकी पैंटी उसकी टांगों से अलग कर दी । पैंटी का उसकी टांगों से निकलना था कि मेरे होठों से सिसकारी निकल गई- वाउउउ ... चंचल ! तुम्हारी चुत तो कमाल की है यार !

उसकी चुत पर झांट थी ही नहीं । शायद आज सुबह ही चंचल अपने चुत पर से झांटें साफ की थी ।

“ऐसा लगता है जैसे तुम अभी तक कुंवारी हो।” इतना बोलकर मैं रस से सराबोर उसकी चुत पर अपने होंठ रखकर उसे चूसने लगा।

वो सिसकार उठी- आह ... उई माँ ... आह ... शस्सशश ... खा जाओ राजा मेरी निगोड़ी चुत को। मेरी चुत का सारा पानी निकाल दो आज!

और वो अपनी टांगें फैलाते चली गई।

“बहुत मजा आ रहा है मेरे सैंया ... चूसते रहो।

उसकी चुत का रसपान करते करते मैं उससे बोला- साली तू तो पूरा मजा ले रही है अपनी चुत को चुसवाकर लेकिन मुझे मजा नहीं आ रहा है।

तब वो बोली- साले भड़वे, बहनचोद! तुम हमको छोड़ोगे तब न हम तुमको मजा देंगे!

और इतना बोल कर वो उठी और मेरे ऊपर चढ़ गई। पहले उसने अपनी नाइटी अपने बदन से अलग की। जैसे ही उसके जिस्म से उसकी नाइटी अलग हुई, मेरे तो जैसे होश ही उड़ गए। क्या बताऊँ ... उफ्फ ... जवानी के रस से भरे दो चुस्त मम्मों और उस पर तने हुए दो काले अंगूर।

मैं एक झटके से उठा और उसके एक निप्पल को अपने अंगुलियों में दबोचा और दूसरे को अपने मुँह में और लगा उसे चूसने लगा पूरी बेरहमी से।

उसे मजा भी आ रहा था और दर्द भी हो रहा था क्योंकि मैं पागलों की तरह उसके मम्मों को निचोड़ रहा था, चूस रहा था और खा रहा था।

दर्द होने के कारण वो मुझे गाली देते हुए बोली- भड़वे साले, अपनी बहन की चुचियों को भी इसी तरह से निचोड़ता है क्या रे बहनचोद?

चुदाई का मजा लेते समय हसीनाओं के मुँह से गाली सुनने में और भी मजा आता है तो मैं भी उसे उसी की भाषा में बोला- रांड साली ... मैं अपनी बहन के साथ क्या और कैसे करता हूँ ये तुम मत सोचो। तुम बस अपनी चुत को संभालो क्योंकि आज तेरी चुत को मिलेगा

मेरा मोटा लंड जो उसको भोंसड़ा बना देगा।

और इतना बोल के मैं उसके दूसरे निप्पल को अपने होठों के बीच लेकर चूसने लगा। वो भी मेरा साथ दे रही थी अपने चुचों को चुसवाने में।

फिर मैंने उसे अपनी गोद से उतारा और खड़ा होकर उसके मुँह के पास अपना मोटा लंड ले जाकर उससे कहा- साली, अब मुझे भी तू थोड़ा स्वर्ग में पहुँचा मेरी छूमिया!

और इतना बोल कर उसके होठों पर मैंने अपना लंड रख दिया।

वो भी मेरा लंड खाने के लिए बेताब थी इसलिए उसने एक ही बार में मेरा 8 इंच का लंड अपने मुँह में घुसा लियाव और लगी उसको चूसने।

उसके चूसने का अंदाज इतना निराला था कि 2 से 3 मिनट में ही मैंने उसके मुँह में अपने लंड का सारा रस निकाल दिया और वो भी साली बिना एक क्षण गवांए मेरे लंड का सारा रस गटक गई। फिर मेरे लंड को अच्छी तरह से एक रंडी की तरह चाटकर उसे साफ की अपनी जीभ से।

मेरे मुँह से अनायास ही निकल गया- सच में चंचल, तेरा लंड चूसने का अंदाज ही कुछ अलग है। मजा आ गया रानी!

और यह बोल कर मैं उसके नंगे बदन पर लेट गया।

फिर हम दोनों थोड़ी देर बाद उठे और नंगे ही चापाकल जाकर स्नान करने लगे। स्नान करते समय हम दोनों ने एक-दूसरे के बदन को रगड़-रगड़ कर साफ किया। जब चिंगारी और घी आमने-सामने हो तो आग लगने में देरी नहीं लगती है।

और वही हुआ हम दोनों के साथ ... हम दोनों के अंदर फिर से चुदाई करने का जोश चढ़ा. वहीं चापाकल पर ही मैंने उसकी एक टांग उठाकर चापाकल पर रखी और मैंने अपना लंड उसकी गर्म रसीली चुत के मुँह पर रखा और उसकी चुत को अपने लंड से सहलाने लगा।

वो तो चुदवाने के लिए अपनी चुत फड़वाने के लिए जल थी और मैं उसे जला रहा था,

तड़पा रहा था। वो आहें भरते हुए बोली- मादरचोद ! आह ... आह ... आह ... सशसस ... चोदो न राजा। अपने लंड से मेरी चुत को फाड़ दो राजा। खा जाओ बहिनचोद मेरी बुर को।

मैं भी उसकी बुर की फांकों को अपने लंड से सहलाते हुए बोला- चंचल, मैं भी तो तड़पा हूँ कई दिनों तक तुम्हें चोदने के लिए। न जाने कितनी बार तेरे नाम की मुठ मारी है। तुम तो सिर्फ आज तड़प रही हो रांड ... घबराओ मत मेरी जान, आज मैं तुम्हारे बदन को ऐसे रगड़ूंगा कि तू बार-बार मेरे लंड से चुदवायेगी।

और बोलते-बोलते एक जोरदार झटका मारा जिससे मेरा लंड उसके चुत को फाड़ते हुए उसकी बच्चेदानी तक घुस गया।

जैसे ही मेरा लंड उसके चुत के अंदर गया, उसके मुँह से चीख निकल गई- उईई ... माँ ... आह ... आह.

मैं उसकी चीख सुनकर रुक गया और उसकी चुची को अपने में लेकर चूसने लगा।

थोड़ी ही देर में वो मेरा साथ देने लगी यानि वो अपनी कमर ऊपर नीचे करने लगी। मेरा लंड तो था ही जोश में तो मैं भी अपना लंड अंदर-बाहर करने लगा यानि अब उसको चोद रहा था मैं। उसकी चुत से पानी निकलने के कारण जब मेरा लंड उसकी चुत में आसानी से बाहर-अंदर हो रहा था तो फच-फच-फच-फच की आवाज निकल रही थी जो हम दोनों के अंदर और जोश बढ़ा रहा था।

साथ ही साथ वो मादक सिसकारियाँ भरते हुए मुझे गाली भी दे रही थी।

फिर उसको मैंने अपनी गोद में उठाया और बिस्तर पर ले जा कर उसकी दोनों टांगों को उठाकर अपने हाथों के बीच फंसाकर उसके दोनों मम्मों को दबोचा और उसकी चुत में अपना लंड फिर से पेल दिया। पूरा कमरा चुदाई की फच-फच और चंचल की मादक सिसकारियों से गूँज रहा था।

लगभग 10-12 मिनट तक हम दोनों ने चुदाई का मजा लूटा और फिर एक समय आया जब उसका और मेरा शरीर अकड़ने लगा। हम दोनों ने एक साथ अपना माल छोड़ा और मैं उसके बगल में गिर कर निढाल हो गया।

रात के 11 बज रहे थे उस वक्त ; चंचल को मैंने अपने ऊपर खींचा और बोला- क्यों चंचल, मजा आया चुदवाने में ? पता चल गया मेरी ताकत का ? साली बड़ी फुदक रही थी चुदवाने के पहले ; अब बोल ?

और मैं उसके होठों पर अपने होंठ रखकर चूमने लगा।

थके होने के कारण हम दोनों तुरंत ही सो गए।

लगभग 3 बजे मेरी नींद खुली तो देखा कि चंचल मेरे लंड को चूस रही थी ; मैं बोला- फिर से चुदवाना है ?

वो बोली- हाँ यार !

और फिर हम दोनों एक बार फिर से चुदाई के समंदर में खो गए।

उस दिन के बाद से जब भी मेरी पत्नि घर नहीं रहती थी तो हम दोनों चुदाई का भरपूर मजा लेते थे।

आप सब को मेरी यह कहानी कैसी लगी, मेल द्वारा मुझे जरूर बताइयेगा। आपके मेल का मुझे बेसबरी से इंतजार रहेगा।

मेरा ईमेल आईडी है- kumar.nitish05@gmail.com

चूँकि मैं पहली बार अन्तर्वासना में अपनी कहानी लिख रहा हूँ तो गलतियों के लिए क्षमाप्राथी रहूँगा।

धन्यवाद.

Other stories you may be interested in

अन्तर्वासना की चुदक्कड़ पाठिका की चुदास

दोस्तो, मैं राहुल फिर से हाज़िर हूँ अपनी एक पाठिका की सेक्सी कहानी के साथ। इस पाठिका ने मेरी पिछली कहानियों चाची ने चुदाई करवा के मर्द बनाया और चाची ने रबड़ी लगा कर चूत चाटना सिखाया को काफी पसंद [...]

[Full Story >>>](#)

स्कूल ट्रेनिंग में चूत की प्यास का इलाज़ किया

दोस्तो नमस्कार! मेरे बारे में तो आप सभी जानते ही हैं। मैं राज शर्मा चंडीगढ़ से हूँ. मुझे सेक्सी कहानियां लिखने का व सेक्स करने का बहुत ज्यादा शौक है। लण्ड पर काला तिल होने के कारण चूत का जुगाड़ [...]

[Full Story >>>](#)

कुवारी जवान बुर की चुदाई की लालसा-2

दोस्तो, मेरी पहली चुदाई की गर्म कहानी के पहले भाग कुवारी जवान बुर की चुदाई की लालसा-1 में आपने पढ़ा कि मैं अपनी मौसी के घर गयी हुई थी. मौसी मौसा को कहीं जाना पडा तो मैं पड़ोस के अंकल [...]

[Full Story >>>](#)

लॉण्डरी वाले से पहली चुदाई करवाई-2

जवान लड़की की पहली चुदाई की कहानी का पिछला भाग : लॉण्डरी वाले से पहली चुदाई करवाई-1 >खैर ये सोचते सोचते दस बज गए मगर राजू नहीं आया. हमें लगा कि साला चुतिया बना गया. सनम बोली- उस मादरचोद से तो [...]

[Full Story >>>](#)

लॉण्डरी वाले से पहली चुदाई करवाई-1

दोस्तो, मैं फेहमिना एक बार फिर आप सबके सामने अपनी एक सेक्सी कहानी लेकर हाज़िर हूँ. आज की यह कहानी मेरी नहीं है, बहुत से मेरे प्रशंसकों ने मुझे मेरी प्यारी बहन आयेशा की पहली सेक्स कहानी लिखने का आग्रह [...]

[Full Story >>>](#)

